आकार : डिमाई पृष्ठ-संख्या : 128
मूल्य : ₹ 250 पेपरबैक : ₹ 150

'दस प्रतिनिधि कहानियाँ' सीरीज़ किताबघर प्रकाशन की एक महत्त्वाकांक्षी कथा-योजना है, जिसमें हिंदी कथा-जगत् के सभी शीर्षस्थ कथाकारों को प्रस्तुत किया जा रहा है। इस सीरीज़ में सम्मिलित कहानीकारों की चयनित कहानियों से यह अपेक्षा की गई है कि वे पाठकों, समीक्षकों तथा संपादकों के लिए मील का पत्थर रही हों तथा ये ऐसी कहानियाँ भी हों, जिनकी वजह से स्वयं लेखक को भी कथाकार होने का अहसास बना रहा हो। भूमिकास्वरूप लेखक या संपादक का एक वक्तव्य भी इस सीरीज़ के लिए आमंत्रित किया गया है। किताबघर प्रकाशन गौरवान्वित है कि इस सीरीज़ के लिए अग्रज कथाकारों का उसे सहज सहयोग मिला है। इस सीरीज़ की अत्यंत महत्त्वपूर्ण कथाकार सुधा ओम ढींगरा ने प्रस्तुत संकलन में अपनी जिन दस कहानियों को प्रस्तुत किया है, वे हैं : 'पासवर्ड', 'टॉरनेडो', 'बेघर सच', 'कमरा नंबर 103', 'सूरज क्यों निकलता है?', 'क्षितिज से परे...', 'वह कोई और थी...', 'विकल्प', 'अनुगूँज' तथा 'काश! ऐसा होता...'। प्रस्तुत है इस संग्रह से एक कहानी।

दस प्रतिनिधि कहानियाँ

सुधा ओम ढींगरा

संपादन : सुशील सिद्धार्थ

सूरज क्यों निकलता है?

वे गत्ते का एक बड़ा सा टुकड़ा हाथ में लिए कड़कती धूप में बैठ गए, जहाँ कारें थोड़ी देर के लिए रुककर आगे बढ़ जाती हैं। बिना नहाए-धोए, मैले-कुचैले कपड़ों में वे दयनीय शक्ल बनाए, गत्ते के टुकड़े को थामे हुए हैं, जिस पर लिखा है–"होमलेस, नीड योर हेल्प।" कारें आगे बढ़ती जा रही हैं, उनकी तरफ़ कोई ध्यान नहीं दे रहा।

सैकड़ों कारों में से सिर्फ़ दस-बारह कार वाले, कारों का शीशा नीचे करके उनकी तरफ़ कुछ डॉलर फेंकते हैं और फिर स्पीड बढ़ाकर चले जाते हैं। दोनों आँखों से ही डॉलर गिनते हैं, एक-दूसरे को देखते हैं और न में सिर हिला देते हैं...

अब वे सड़क के नए कोने पर खड़े हो गए हैं, जहाँ गंतव्य स्थान पर मुड़ने के लिए एग्ज़िट के कोने पर रुकने का चिह्न है यानी स्टॉप साइन।

ज्यों ही कारें रुकती हैं, वे गत्ते के टुकड़े को उनके सामने कर देते हैं, कुछ लोगों ने उन्हें गाली दी–"बास्टर्ड, यू आर बर्डन ऑन द सोसाइटी।"

कुछ ने अपनी कार का शीशा नीचे करके इनसे कहा–"वाई यू गाइस डोंट वर्क?"

दोनों ढीठ हो चुके हैं, गालियाँ सुनकर चेहरा भावहीन ही रहता है और दोनों ऐसा अभिनय करते हैं कि जैसे उन्होंने कुछ सुना नहीं। गत्ते का टुकड़ा हाथ में थामे सूखे होंठों पर जीभ फेरते और थूक से गला तर करने की कोशिश करते हुए, वे एक कार को छोड़, दूसरी की ओर चल पड़ते हैं।

कई दिनों से उनके गले सूखे हुए हैं, शराब की एक बूँद उन्हें नसीब नहीं हुई। पूरे बदन में बहुत तनाव है, उसे तनावरहित करने के साधन नहीं जुटा पाए वे। जेब में वेलफेयर में मिले भोजन के कूपनों के अतिरिक्त एक डॉलर भी उनके पास नहीं है। ये कूपन सरकार उन्हें खाने की सामग्री ख़रीदने के लिए देती है। कूपन बेचकर वे शराब की बोतल और सिगरेट का पैकेट ख़रीदना चाहते हैं, पर कोई ख़रीदार नहीं मिल रहा उन्हें। दोनों निराश हैं, परेशान हैं, हलक पानी से बहल नहीं रहा। उन्हें बियर चाहिए, व्हिस्की चाहिए। ये सब वे कहाँ से लाएँ? हारकर आज उन्होंने अपना पुराना धंधा अपनाया...इससे कई बार अच्छी कमाई हो जाती है। यह कमाई एक रात का पूर्ण सुख दे जाती है। वह रात अगले कुछ महीनों के लिए उन्हें काफ़ी तुष्ट कर जाती है...।

शाम ढलने से पहले ही उन्होंने अपनी कमाई को गिना, अभी भी मनचाही रकम पूरी नहीं हुई। दोनों बेहद थक गए हैं। पसीने से भीग गए हैं और उन्हें शाम से पहले ही शैल्टर होम में लौटना है। वे पास के बस स्टॉप की ओर चल पड़े। दोनों चुप हैं, कुछ बोल नहीं रहे। डाउन टाउन राले की बस आती देख, वे भागकर उसमें चढ़ गए। यह बस बेघर लोगों की रसोई (सूप किचन) के पास जाकर रुकती है, वहीं मुफ़्त में खाना खाकर वे साथ ही के शैल्टर होम में सोने जाने की सोच रहे हैं। कई दिनों से वे यही कर रहे हैं, इस तरह वे अपने कूपन बचा रहे हैं। उन्हें बेचकर वे ज़्यादा से ज़्यादा पैसा

बनाना चाहते हैं।

बस में बैठते ही पहली बार पीटर ने मुँह खोला–"भाई, मंदी ने अमरीका के लोगों को सचमुच मार डाला है। मुझे उन पर तरस आ रहा है। उनके पास हम जैसे बेघर लोगों को देने के लिए डॉलर ही नहीं हैं।"

सिर खुजाते हुए जेम्स ने कहा–"यार, पैसे के साथ-साथ लोगों के दिल भी छोटे हो गए हैं। इनसानियत तो रही नहीं। चिलचिलाती धूप में बैठे भीख माँगते रहे। किसी को दया नहीं आई। पहले काफ़ी पैसे मिल जाते थे...।"

उस बस में अधिकतर बेरोज़गार, बेकार, बेघर पिछले स्टॉप से ही बैठे हुए थे, वे सब सिर हिलाकर जेम्स का साथ देने लगे–"हाँ-हाँ, बहुत ग़लत है यह। लोगों को देखना चाहिए...कितनी कड़ी मेहनत करते हैं हम।"

"हमारी स्थिति कोई समझता नहीं। आज दो जगह काम माँगने गया था, काम मिला नहीं। पिछले दो सालों से यही हो रहा है। बस में चढ़ने के लिए भी पैसे चाहिए। कहाँ से पैसा लाऊँ?" बस में बैठा माइक रोष में बोला।

"सरकार को कुछ करना चाहिए, हम जैसे बेरोज़गार, बेघर लोगों के लिए निःशुल्क बसें चलानी चाहिए...।" जेम्स बोला।

"अरे, सरकार कुछ नहीं करेगी, यू. एस. ए. की इकोनॉमी का बुरा हाल है। देखते नहीं, लोगों के पास हम ग़रीबों को देने के लिए पैसे नहीं।" पीटर बोला।

बातें करते-करते डाउन टाउन राले के शैल्टर होम के केंद्रीय ऑफिस का बस स्टॉप आ गया, सब लोग यहीं उतर गए। रसोई इसी ऑफिस में है।

शाम होते ही सूप किचन में होमलेस लोग भोजन के लिए इकट्ठे होने शुरू हो जाते हैं, बाद में ये लोग सोने के लिए किसी न किसी शैल्टर होम में जगह पा लेते हैं। इस रसोईघर में शहर के कुछ रेस्टोरेंट अपना बचा हुआ खाना और बहुत से ग्रोसरी स्टोर्स अपनी सब्जियाँ भेजते हैं। स्कूलों में बच्चों को इनकी मदद करना सिखाया जाता है और वे कैन फ़ूड इकट्ठा करके यहाँ भेजते हैं। निश्चित समय पर यहाँ लंच और डिनर दिया जाता है। इसलिए सब होमलेस, समय पर यहाँ खाना खाने पहुँच जाते हैं। इस रसोई में अकसर कोई न कोई समाजसेवी संस्था के स्वयंसेवी खाना दे जाते हैं, कई बार वे उसी रसोई में खाना बनाकर इन लोगों को खिलाते हैं। भारतीय मूल के लोग तो उत्सवों और बच्चों के जन्मदिन पर यहाँ स्वादिष्ट व्यंजन दे जाते हैं।

आज रात्रि के भोजन में स्थानीय संस्था के स्वयंसेवकों ने अमरीकी व्यंजन परोसे। एंजला ने मुँह बनाया–"नो टेस्ट...।" पीटर ने फिर कहा–"अमरीका ग़रीब हो रहा है। सरकार को कुछ करना चाहिए। मंदी ने खाना भी बेकार कर दिया...।" आसपास बैठे सभी होमेलेस बोले–"तुम बिलकुल सही कह रहे हो दोस्त... बिलकुल सही।" स्वयंसेवी चुपचाप खाना परोसते रहे...।

मुफ़्त में खाना खाकर जेम्स और पीटर ने अपनी फ़ूड स्टैम्प्स यानी कूपन फिर बचा लिए। अमरीकी सरकार सोचती है कि ग़रीबी रेखा से नीचे के लोगों को फ़ूड स्टैम्प्स देकर वह उनका भला कर रही है, इससे वे भूखे नहीं रहेंगे और खाना ही खाएँगे। अगर पैसा देंगे तो शराब व सिगरेट ख़रीद लेंगे, पर निकालने वाले तो यहाँ भी रास्ता निकाल लेते हैं। खाना खाने के बाद वे सोने के लिए शैल्टर होम की ओर चल पड़े...।

शैल्टर होम के सामने एक लंबी लाइन लगी है। उसमें तरह-तरह के लोग खड़े हैं। कई दिनों से नहाए हुए नहीं हैं, गंदे, कुछ नशेड़ी, कुछ सचमुच में समय के हाथों पिटे हुए, कई जो जीवन में काम नहीं करना चाहते, बस सरकारी सेवा का जी भरकर आनंद लेना चाहते हैं, पीटर और जेम्स की तरह। अधिकतर ये लोग उन्मुक्त, बेपरवाह, जीवन की चुनौतियों से परे अपनी दुनिया में डूबे रहते हैं। उदासी, घुटन और बदबू वातावरण में समाई हुई हैं। पंक्ति में खड़े यूजीन ने अपने अगले वाले साथी को धीरे से बताया–"ब्रदर, हाईवे 40 के पास हैरिटेज इन मोटल वाले आधी क़ीमत पर कूपन ले रहे हैं...।" उन दोनों ने सुन लिया। एक-दूसरे की ओर देखा। दोनों की आँखों में चमक आ गई। बिना बोले वे एक-दूसरे की बात समझ गए। लाइन को छोड़कर वे भाग गए।

सुधा ओम ढींगरा

शिक्षा : पीएच. डी.

प्रकाशित कृतियाँ

उपन्यास : नक़्क़ाशीदार केबिनेट • **कहानी संग्रह :** कमरा नंबर 103, कौन सी ज़मीन अपनी, सच कुछ और था, वसूली • **कविता संग्रह :** सरकती परछाइयाँ, धूप से रूठी चाँदनी, तलाश पहचान की, सफर यादों का।

संपादन : वैश्विक रचनाकार : कुछ मूलभूत जिज्ञासाएँ (दो भाग), विमर्श-अकाल में उत्सव, मेरा दावा है (अमेरिकी शब्द-शिल्पियों का काव्य संकलन), इतर-प्रवासी महिला कथाकारों की कहानियाँ।

अनुवाद : कौन सी ज़मीन अपनी का 'कुनखन आपून भूमि'–असमी में अनूदित। कौन सी ज़मीन अपनी का 'टारनेडो'–पंजाबी में अनूदित। ओह कोई होर सी–पंजाबी में अनूदित। कई कहानियाँ अंग्रेजी में अनूदित।

भारत के अनेक पत्र-पत्रिकाओं में कहानियाँ, कविताएँ और आलेख प्रकाशित।

मान्यता/पुरस्कार/सम्मान : केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा द्वारा 2014 का पद्मभूषण डॉ. मोटूरि सत्यनारायण पुरस्कार। उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ द्वारा 2013 का 'हिंदी विदेश प्रसार सम्मान'। स्पंदन संस्था, भोपाल की ओर से 2013 का स्पंदन प्रवासी कथा सम्मान। पैंतीसवाँ पंडित जनार्दन शर्मा शिवना सम्मान। 'कौन सी ज़मीन अपनी' कहानी संग्रह को पंद्रहवाँ अम्बिका प्रसाद दिव्य पुरस्कार प्राप्त हुआ।

संप्रति : संरक्षक एवं प्रमुख संपादक–विभोम-स्वर, संरक्षक एवं सलाहकार संपादन–शिवना साहित्यिकी, उपाध्यक्ष–ढींगरा फ़ाउंडेशन, अमेरिका।

संपर्क : 101, Guymon Ct., Morrisville, NC-27560, USA

ईमेल : sudhadrishti@gmail.com

आज का दिन अच्छा है उनके लिए. हैरिटेज इन मोटल के पास वाले बस स्टॉप पर रुकने वाली बस आकर सूप किचन के सामने रुक ही रही थी। वे जल्दी से उसमें चढ़ गए। कुछ घंटों के बाद होने वाले सुखद अनुभवों की कल्पना से ही उनके रूखे-सूखे चेहरों पर रौनक़ आ गई। वे हैरिटेज इन मोटल में गए और अपने कूपन आधे में बेच दिए। कई मोटल वाले फूड स्टैम्प्स आधी क़ीमत पर लेकर, अपने मोटल के लिए खाद्य सामग्री ख़रीद लेते हैं। उससे उन्हें काफ़ी बचत हो जाती है।

पैसे गिनते हुए जेम्स ने कहा–"भाई, महँगाई बहुत हो गई है. सस्ती से सस्ती लड़की भी पचास डॉलर से कम में साथ नहीं चलती, अभी और डॉलर चाहिए...।"

"नहीं, आज हमें इसी से काम चलाना है, अब और इंतज़ार नहीं होता," पीटर बेचैन सा होता हुआ बोला।

मोटल के बाहर से ही उन्होंने फिर डाउन टाउन राले वाली बस अपने पुश्तैनी घर जाने के लिए पकड़ी। यह घर उनके नाना-नानी का है, जिसमें वे जन्मे-पले हैं और अब वह ख़स्ता हालत में है, किसी के पास उसे ठीक करवाने के लिए पैसे नहीं। इस घर में उनकी दो बहनें अपने बच्चों के साथ रहती हैं और बाक़ी के भाई कभी-कभार इस घर में थोड़ी देर के लिए रुक लेते हैं, पर रहता कोई नहीं। हाँ, वे दोनों अकसर आते हैं, उनका कुछ सामान पड़ा रहता है यहाँ। माँ तो कई साल पहले इस दुनिया से चली गई।

टैरी नाम की महिला उनकी माँ थी। उसके लिए माँ शब्द सही नहीं, उसे माँ कहना उचित भी नहीं, यूँ कह सकते हैं कि वह बच्चे पैदा करने वाली मशीन थी। माँ क्या होती है, बच्चों को पता नहीं और ममता क्या होती है, टैरी को पता नहीं। बस उसने तो बच्चों को जन्म दिया, ग़रीबी रेखा से नीचे वालों की सरकारी सहायता वेलफेयर लेने के लिए। हर बच्चे के बाद नए बच्चे के पालन-पोषण हेतु वेलफेयर से उसे और पैसा मिल जाता था।

उसकी माँ अकसर गुस्सा होती–"टैरी, तुम अब और ख़ाली नहीं बैठोगी, कुछ काम-धंधा करो, नहीं तो मैं घर से निकाल दूँगी। हर साल पेट में बच्चा डाल लेती हो। तुम्हें तो यह भी पता नहीं कि किसका बाप कौन है।"

टैरी माँ के गले में बाँहें डालकर कहती–"माँ, तुम मुझे घर से नहीं निकाल सकतीं, मैं तुम्हारी अकेली संतान हूँ और तुम्हारा वंश बढ़ा रही हूँ। क्या तुम ग्रैंड चिल्ड्रन नहीं चाहतीं?"

"टैरी, मुझे नाती-नातिनें पसंद हैं। पर तुम कोई काम तो करो। बच्चे हम पालते हैं और तुम सारा दिन पुरुष मित्रों के साथ सिगरेट फूँकती हो और शराब में मस्त रहती हो। रात को तुम्हें क्लबों से फ़ुर्सत नहीं मिलती। तुम्हें पता भी है कि बच्चे कैसे पल रहे हैं? बहुत कामचोर हो गई हो। तुम्हारी हड्डियों में आराम बस गया है। ऐसे कैसे चलेगा?" माँ झगड़ा करती।

"चलेगा माँ...चलेगा देखती रहो। मुझे पता है, बच्चे अच्छे पल रहे हैं, तुम लोग अच्छे नाना-नानी हो।" वह हँसकर कहती–"वैसे मैं काम क्यों करूँ? हमारे बुज़ुर्गों ने वर्षों इन लोगों की गुलामी की है, अब सरकार का फ़र्ज़ बनता है कि हमारा ध्यान रखे।"

उसने सरकार से अपना ध्यान रखवा लिया और ग्यारहवें बच्चे तक वह आर्थिक रूप से सुरक्षित हो गई। उसके माँ-बाप कुछ बच्चों तक तो खूब लड़ते रहे। फिर उन्होंने भी परिस्थितियों के साथ समझौता कर लिया। आर्थिक सुदृढ़ता ने उन्हें चुप करवा दिया। वेलफेयर के अनुसार पैसा बच्चे के अठारह वर्ष के होने तक दिया जाता है और ऐसे में बच्चों को स्कूल भेजना ज़रूरी होता है। उसने उन्हें स्कूल भेजा, पर वे पढ़ते हैं या नहीं, यह जानना कभी ज़रूरी नहीं समझा। हाईस्कूल किसी ने पास नहीं किया और अठारह वर्ष के होते ही, वे बिना कुछ सीखे स्कूल छोड़ गए।

माँ के स्वभाव, रहन-सहन और आदतों का परिणाम यह निकला कि बेटियाँ माँ के ही नक़्शे-क़दम पर चलती हुईं, रोज़ पुरुष बदलती हैं और तीन-तीन बच्चों की अविवाहिता माँएँ बनकर सरकारी भत्ता ले रही हैं। दो बेटे नशा बेचने वाले गिरोह में शामिल होकर न्यूयॉर्क चले गए, दो चोरी-डकैती में जेल में हैं, उनका जेल में आना-जाना लगा रहता है। एक बेटा किसी बिल्डर के साथ काम करता है और वह ही सही ढंग का निकला है। एक बेटे ने मैरुआना के पौधे घर के पिछवाड़े में उगा लिए थे और उसे स्कूल के बच्चों को बेचने लगा था। अमरीका में मैरुआना ग़ैरक़ानूनी है, सिर्फ़ कैलिफोर्निया में सरकार ने अत्यधिक पीड़ा के रोगियों के लिए, थोड़ी सी खेती करने और कुछ स्टोरों पर बेचने की इजाज़त दी हुई है। एफ़.बी.आई. की नारकोटिक्स ब्रांच ने कई दिन उसका पीछा करके, छापा मारकर पकड़ लिया और वह भी जेल में है।

पीटर और जेम्स सबसे छोटे और जुड़वाँ हैं। दोनों में बहुत दोस्ती है। एक नंबर के पाज़ी हैं। किसी काम में मन नहीं लगता इनका, फ़्री में खाना चाहते हैं। माँ की तरह वेलफेयर का भरपूर फ़ायदा उठा रहे हैं। ज़रूरतें पूरी करने के लिए भीख माँग लेते हैं, पर मेहनत का कोई काम नहीं करना चाहते। बड़े भाई जार्ज ने उन्हें बिल्डर के पास नौकरी दिलवाई, पर वे छोड़-छाड़कर आ गए कि वहाँ बहुत कठिन काम करना पड़ता है।

"हमारे शरीर बहुत नाज़ुक हैं, ये भारी-भरकम काम नहीं कर सकते। हम भी इन शरीरों को वैसे ही रखेंगे जैसे ये रहना चाहते हैं। कोई काम नहीं करेंगे।" बड़ी बेशर्मी से हँसते हुए दोनों ने कहा।

जार्ज को गुस्सा आ गया–"इस घर में आप लोग काम क्यों नहीं करना चाहते, काम करने से आप सब कतराते क्यों हैं? क्या तुम लोगों के मन में दूसरों को देखकर कोई उमंग नहीं उठती। उनकी तरह जीने की चाह नहीं होती। डल-डफ़्फ़र से सारे बैठे रहते हैं, हरामी सब निकम्मे हो गए हैं, निठल्ले ख़ाली बैठकर मुफ़्त की खाने के आदी हो गए हैं। अबे सालो, मैं तुम दोनों की ज़िंदगी बदलना चाहता हूँ और तुम हो कि इस गंदगी में पड़े रहना चाहते हो...।"

"जहाँ जन्मे-पले वहाँ तुम्हें गंदगी लगती है...छी...छी...बड़े ही शर्म की बात है...। यह घर हमें बहुत प्यारा लगता है। तुम जो भी ज़िंदगी जीना चाहते हो, जियो, हमें इस स्वर्ग

को छोड़ने को मजबूर क्यों कर रहे हो। हमें दूसरे लोगों की तरह दो वक़्त के भोजन के लिए काम कर-कर के मरना-खपना नहीं है। वह तो हमें बिना काम किए ही मिल जाता है।" ढिठाई से मुँह बनाता हुआ जेम्स बोला था।

"कोकरोचेज़ तो अपने ऊपर से हटा लो, तुम्हारे बदन खेल का मैदान बने हुए हैं उनके लिए। गधो! थोड़े-बहुत हाथ-पाँव हिला लोगे तो तुम्हारे बदन की नाज़ुकता को कुछ नहीं होगा।"

"जार्ज, तुम परेशान क्यों होते हो। इस घर में हम सब इकट्ठे रहते हैं। ना वे हमें कुछ कहते हैं, ना हम उन्हें।"

जार्ज की आवाज़ निराशा से ऊँची हो गई थी-"ठीक है, पड़े रहो इस गटररूपी स्वर्ग में, गंदी नाली के कीड़ो...बास्टर्ड...मैं आज अभी इसी वक़्त से आप सबको और यह घर छोड़ता हूँ।" और...वह चला गया। फिर कभी लौटकर नहीं आया। उसे किसी ने याद भी नहीं किया।

उस दिन के बाद पीटर और जेम्स ने कभी-कभार भीख ज़रूर माँगी, जिसे वे धंधा कहते हैं, पर बाक़ायदा कोई काम नहीं किया। वे वेलफेयर लेने लगे, अलग-अलग शैल्टर में सोते हैं। घर में दो बहनें और छह बच्चों के साथ सोने में उन्हें असुविधा होती है पर इस स्वर्ग का चक्कर ज़रूर लगा लेते हैं।

आज भी वे घर आए हैं...

घर में घुसते ही उन्होंने भाग-भागकर काम किया। अलमारी में से आयरिश स्प्रिंग साबुन की टिक्की निकाली, जो उन्होंने ख़ास मौक़ों के लिए सँभालकर रखी हुई है, उसे मल-मलकर उन्होंने अपने शरीर की गंदगी साफ़ की। राइट गार्ड डीओडोरेंट पूरे बदन पर स्प्रे किया। खूब रगड़-रगड़कर दाँत साफ़ किए। फिर माउथ फ्रेशनर से कुल्ला किया। बहुत दिनों बाद शेव बनाई। साफ़-सुथरे अधोवस्त्र पहने। प्रेस किए हुए कपड़े निकाले, जो उन्होंने विशेष रातों के लिए रखे हुए हैं। उन्हें पहनकर उन्होंने अपने आप को शीशे में देखा, मूस लगाकर अपने घुँघराले बाल सेट किए। अंत में फिर ब्लैक सुएड कलोन की शीशी निकालकर उन्होंने अपनी बगलों, जाँघों और कानों के पीछे उसे लगाया। सज-धजकर तैयार होकर उन्होंने अपनी सारी चीज़ें वापस अलमारी में रखकर ताला लगाया। केमार्ट स्टोर से क्रिसमस के दिनों में सेल पर उन्होंने ये सारी चीज़ें खरीदी थीं जिन्हें वे बड़े प्यार से सँभालकर, सहेजकर ताले में रखते हैं। पर यह ताला कई बार टूटा भी है, उनकी बहनों के बच्चे ताला तोड़कर इन प्रसाधनों का प्रयोग कर चुके हैं। गाली-गलौच, लड़ाई-झगड़े के बाद नया ताला लगा दिया जाता है। चाबी लेकर वे जल्दी-जल्दी बाहर निकले...।

बाहर निकलते ही ये दोनों, सड़क पर आ गए और क्लब की तरफ़ चल पड़े। दोनों ने पैसे आधे-आधे बाँटकर, अपनी जेबों में रख लिए। राले के डाउन टाउन के जिस इलाक़े में इनका घर है, वह इस एरिया के क्लब से ज़्यादा दूर नहीं है। बहुत ही पुराना इलाक़ा है और मकान भी टूटे-फूटे हैं। कई घर थोड़े ठीक कर लिए गए हैं और कई घरों की खिड़कियों के शीशे टूट चुके हैं और उन पर लकड़ी का फट्टा लगाकर ढका गया है और कई घर जीर्ण-शीर्ण अवस्था में हैं।

क्लब के निकट जाते ही वातावरण में शराब और धुएँ का भभका उठता महसूस हुआ। कई तरह के तेज़ परफ्यूम, क्लोन की सुगंध और तरह-तरह की शराब-सिगरेट के धुएँ की दुर्गंध मिश्रित रूप से एक घुटी-घुटी सी गंध को चारों तरफ़ फैलाए है। दोनों को यह गंध बहुत अच्छी लगी। लंबी-लंबी साँसें लेकर, उन्होंने अपने नथुनों से फेफड़ों में उसे भरा और खुश होकर उछलकर बोले-"आज हमारी रात है। आज हम जी भरकर मज़े लूटेंगे...।" और क्लब की ओर बढ़ गए।

बिना पिए ही वे झूमते हुए 'पैराडाइज़' क्लब के दरवाज़े के पास चले गए। सिक्योरटी वाले ने दरवाज़ा खोला और उन्हें अंदर जाने दिया। क्लबों में यह सबसे सस्ता और घटिया क्लब है और बार, रेस्तराँ और क्लब तीनों का काम करता है। कम आमदनी वाले लोग ही यहाँ आते हैं। अच्छे क्लबों में तो प्रवेश शुल्क होता है।

दरवाज़ा खोलते ही मद्धिम रोशनी और डी. जे. के संगीत की ऊँची आवाज़ में दुर्गंध-सुगंध की मिश्रित गंध बड़ी तेज़ी से उनके फेफड़ों में घुसी। वे सम्मोहित से हुए बार की ओर चल पड़े। सिगरेट के धुएँ, स्मोक मशीन के बादलों और लेसर लाइट को पार करते हुए, वे बियर का जग लेकर क्लब में एक कोना ढूँढ़ने लगे। कोने में बैठते ही उन्होंने चारों ओर देखा-क्लब के बीचोबीच कई जोड़े, कुछ साथ-साथ सटे, कुछ दूर-दूर, कुछ एक-दूसरे से चिपटे और कुछ लिपटे नाच रहे हैं। उनको देखते हुए वे जल्दी-जल्दी बियर के दो गिलास गटक गए।

शरीर में गर्मी आनी शुरू हो गई। उन्होंने देखा थोड़ी दूरी पर ही दो लड़कियाँ वाइन के गिलास पकड़े इधर-उधर देख रही हैं। उनकी नज़रें हरेक के चेहरे पर घूम रही हैं। पीटर और जेम्स ने उन नज़रों को पहचान लिया। बैरे को बुलाकर पैसे देकर उनके ख़ाली हो रहे गिलासों को भरने को कहा, इससे उन्हें पता चल जाएगा कि उन लड़कियों की मंशा क्या है और अपने लिए भी बियर का एक और जग मँगवाया। वातावरण कानफोड़ू संगीत, ऊँची आवाज़ों, थिरकते क़दमों, लड़खड़ाती ज़ुबानों से गूँज रहा है-किसी को किसी की बात सुनाई नहीं दे रही। सब ज़ोर-ज़ोर से बोल रहे हैं। एक तरह से चिल्ला रहे हैं। एक कोने में एक महिला-पुरुष बेतहाशा हँस रहे हैं और बार-बार एक-दूसरे से लिपट रहे हैं, चुंबन ले रहे हैं। डांस फ्लोर पर कुछ जोड़े एक-दूसरे से इतने सटे हुए हैं जैसे वे एक-दूसरे में खो जाना चाहते हैं। सोका म्यूजिक समाप्त हुआ, और अब हिप-हॉप शुरू हो गया। कुछ जोड़े बैठ गए, कई नए आए। क़दमों, कूल्हों और कमर का रिदम शुरू हुआ।

रात घिरने लगी और भीड़ बढ़ने लगी है। लेसर लाइट्स के बदलते रंगों में डांस फ्लोर भर गया। लड़कियों ने बैरे से पूछा कि उनके गिलास किसने भरवाए हैं...बैरे ने उन दोनों की ओर इशारा कर दिया। लड़कियों ने गिलास ऊँचे करके धन्यवाद किया। जेम्स और पीटर की बाछें खिल गईं।

गीत बदला, संगीत बदला, सालसा डांस शुरू हो गया। लड़कियाँ उठकर जेम्स और पीटर की तरफ़ आ गईं और अपना परिचय दिया-लौरा और सहरा। जेम्स और पीटर ने अपना नाम बताकर हाथ बढ़ा दिए। उन्होंने डांस फ्लोर की ओर इशारा किया। चारों के पैर उस पर थिरकने लगे। जेम्स और पीटर ने अब ग़ौर से उन दोनों को देखा।

वे सुगठित बदन वाली, बहुत चुस्त-दुरुस्त, जीवन से भरपूर लगीं उन्हें। ऐसी लड़कियाँ उनके समुदाय में बहुत सुंदर मानी जाती हैं। आज की रात इतनी सुंदर लड़कियों का सान्निध्य प्राप्त होगा उन्हें, अपने भाग्य पर इठलाने लगे वे।

वातावरण में फैली मादकता, दो जग बियर के बाद, व्हिस्की पीने से दोनों पर नशा हावी हो गया। नसें कसने लगीं। स्नायुओं में तनाव बढ़ गया। शराब देखकर इनसे रहा नहीं जाता और हमेशा की तरह अधिक ही पी लेते हैं। पीटर, लौरा पर थोड़ा झुक गया। लौरा ने भी झुकने दिया और उसने अपना एक बाजू पीटर की बग़ल में डाल दिया। पीटर उसके और क़रीब हो गया। सहरा ने खुद ही जेम्स के गले में अपनी बाँहें डाल दीं। जेम्स ने भी उसकी कमर को हाथों से कस लिया। कुछ देर वे इसी तरह नाचते रहे, एक-दूसरे के साथ और फिर कभी एक-दूसरे से परे होकर। पीटर के अंग बेचैन हो गए, उससे अब इंतज़ार नहीं हो रहा।

उसने लौरा से पूछ ही लिया–"यहाँ से जाने के बाद क्या करेंगी आप?"

"कुछ नहीं, हम फ्री हैं, आप भी चल सकते हैं हमारे साथ, हलका-फुलका कुछ खाएँगे और फिर जो आप चाहेंगे; वही करेंगे। सहरा मेरी रूम मेट है।"

पीटर ने खुश होकर उसे अपनी बाँहों में भर लिया, लौरा भी उसकी बाँहों में लहराने लगी। सहरा जेम्स के साथ लिपट-लिपटकर नाचने लगी। पीटर ने झूमते हुए कहा–"चलो अब चलते हैं?"

"हमें वाशरूम जाना है। आप इंतज़ार करें हम अभी आती हैं," कहकर वे चली गईं।

दोनों इंतज़ार करने लगे और उन्होंने एक-एक गिलास वाइन का और मँगवा लिया। इस बार बैरा ऑर्डर से पहले उनसे पैसे लेना भूल गया। दूसरे जोड़ों को मदमस्ती में देखकर उन दोनों को कुछ होने लगा। एक ही घूँट में गिलास ख़ाली कर दिए उन्होंने। लौरा, सहरा अभी वाशरूम से लौटी नहीं। थोड़ा सा पीने के बाद पीटर का अपने पर क़ाबू नहीं रहता और आज तो उसने बहुत पी ली है। उसने अपनी क़मीज़ उतारी और मेज़ पर चढ़कर स्ट्रिपर डांस करने लगा, संगीत की धुन पर। बेहूदा हरकतें शुरू हो गईं। जाँघों पर हाथ फेरने लगा और गुप्तांगों पर हाथ रखकर, कमर मटका-मटकाकर नाचने लगा। फिर कभी अपनी छातियों को छूने लगा। जेम्स ने भी उसी का अनुसरण किया और उनके आसपास के लोग तालियाँ बजा-बजाकर उन दोनों का मज़ा लेने लगे।

उन पर नशा इतना हावी हो गया था कि वे गिरने लगे और लौरा, सहरा को आवाज़ें देने लगे, वाशरूम की ओर देखने लगे–वाशरूम मुख्य दरवाज़े के पास है। उनकी आवाज़ें तेज़, लाउड संगीत और लोगों के शोरगुल में खो गईं। मुख्य दरवाज़े से दो लड़कियाँ भीतर आईं, उन्हें वे दोनों लौरा और सहरा लगीं। वे उनसे लिपटने को उनकी ओर बढ़े। वे चीख़ पड़ीं। उन लड़कियों के पुरुष मित्र आगे आए, उन्होंने पीटर और जेम्स को एक-एक घूँसा ही लगाया था कि वे चित होकर फर्श पर लुढ़क गए। बैरे ने आकर उनकी जेबें देखीं, वह अपनी पेमेंट लेना चाहता है, जो वह पहले लेना भूल गया था। जेबें ख़ाली हैं। लौरा और सहरा नाचते-नाचते उनकी जेबें ख़ाली कर गईं और वाशरूम के बहाने वहाँ से निकल गईं। सिक्योरिटी गार्ड को बुलाया गया।

सिक्योरिटी गार्ड लुढ़के हुए पीटर और जेम्स को घसीटते हुए क्लब से बाहर ले आए और एक कोने में उन्हें लाकर लिटा गए। थोड़ी देर बाद आकर उनकी शर्टें उन पर फेंक गए। वहाँ और भी कई पियक्कड़ गिरे पड़े थे। अच्छे क्लबों के बाहर तो पुलिस होती है और ऐसे लोगों को उठाकर ले जाती है, पर इस क्लब के तो आसपास भी पुलिस नहीं होती, वह जानती है कि इन लोगों का रोज़ का काम है। हत्या या बलात्कार के समय ही पुलिस वाले पहुँचते हैं। रात के तीन बजे सिक्योरिटी गार्ड कई और टुन, टल्ली हुए पियक्कड़ों को उन्हीं के साथ सटाकर लिटा गए...सारी रात वे दोनों क्लब के बाहर कोने में सोए रहे...।

सुबह सूरज पूरे जोश के साथ धरा पर अपनी रोशनी लेकर आया। पीटर की आँखों पर सूर्य चमका। उसने आँखों पर हाथ रख लिया और जब जेम्स की आँखों पर उसने अपनी किरणें फेंकीं तो वह कुलबुलाया–'साला यह सूरज क्यों निकलता है? इसको और कोई काम नहीं, बास्टर्ड। तंग करने चला आता है। कच्ची नींद से उठा दिया। इतनी प्यारी नींद आ रही थी।'

"अबे, उठ माँ के...नींद के प्रेमी...गद्दों पर पड़े हैं ना, जो नींद टूट गई...चलो उठो...," सिक्योरिटी गार्ड ने ठोकर से उठाया, "सफ़ाई वाले आ रहे हैं, यहाँ की सफ़ाई करनी है। चलो उठो अपने-अपने घरों को जाओ।" वह रूखा-सा बोला। उसे रोज़ ऐसे लोगों को सँभालना पड़ता है।

घर के नाम पर वे दोनों बौखलाकर उठ बैठे–वे कहाँ हैं? चारों ओर वे देखने लगे। अरे, क्लब के बाहर, क़मीज़ें पास पड़ी हुई हैं। उन्होंने सिर पकड़ लिया। सिर में दर्द की तीखी लहर दौड़ गई...।

सफ़ाई वाले आ गए, वे ख़ाली बोतलें, बियर के कैन और सिगरेटों के टुकड़े उठाने लगे। उन दोनों ने भी क़मीज़ें पहनीं और ज्यों ही उठने लगे तो उन्होंने महसूस किया कि उनके अधोवस्त्र चिपचिपे और गीले हैं। वे धीरे-धीरे उठे, खड़े होना मुश्किल हो रहा था। बड़ी कठिनाई से खड़े होकर उन्होंने अपनी जेबों में हाथ डाला तो जेबें ख़ाली मिलीं...।

वे चिल्ला पड़े–"इनको नरक में मार पड़े, कुतियाँ पैसे ले गईं और हमें खुद के लिए छोड़ गईं। कल कितनी चाह थी। मेहनत की कमाई भी गई और सुख भी नहीं मिला। अरे, लूट लिया ग़रीबों को... थू...कुतियाँ...।"

सफ़ाई मज़दूर उनकी ओर देखने लगे। जेम्स उनसे मुख़ातिब होकर बोला–"भाई, अमरीका के लोगों को मंदी ने निचोड़ दिया है, जो बेघर लोगों को भी लूटने लगे हैं, सरकार को कुछ करना चाहिए।"

उनके पास एक डॉलर भी नहीं बचा। जेबें ख़ाली हैं। फूड स्टैम्प्स पहले ही बेच चुके हैं। कल का नशा आज भी उन पर हावी है। वे लड़खड़ाते क़दमों से घर की ओर चल पड़े, गत्ते का टुकड़ा उठाने, धंधे पर जो जुटना है...।

□